3

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म-शिक्षा

9.5

ओ३म्

श्रीमद्दयानन्द कॉलिज प्रबन्धकर्त्री सभा
नई दिल्ली—११००५५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

धर्म–शिक्षा

[भाग–3]
(तीसरी कक्षा के लिए)

●

संशोधित तथा परिवर्धित
बाईसवां संस्करण

●

प्रकाशक :

श्रीमद्दयानन्द कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति
चित्रगुप्ता मार्ग नई दिल्ली–५५

(सन् 1993) मूल्य 3–50 रु०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संख्या	विषय		पृष्ट
१.	ईश-विनय (प्रार्थना)	...	५
२.	गायत्री मन्त्र	...	६
३.	महर्षि दयानन्द सरस्वती	...	८
४.	मूलशंकर और शिव-पूजन	...	९
५.	स्वामी दयानन्द—संन्यास और प्रचार	...	१२
६.	क्षमाशील दयानन्द	...	१४
७.	निडर संन्यासी	...	१६
८	दयानन्द और निर्धन माता	...	१७
९.	ऋषि-निर्वाण	...	१९
१०.	अच्छा मित्र	...	२१
११.	अपनों से वैर	...	२४
१२.	मीठी वाणी	...	२६
१३.	राजा और मन्त्री	...	२८
१४.	माता का ऋण	...	३१
१५.	अस्तेय (चोरी न करना)	...	३३
१६.	बाल-प्रतिज्ञा (भजन)	...	३५
१७.	जैसी करनी वैसी भरनी	...	३६
१८.	जज की फीस	...	३८
१९.	स्वास्थ्य ही जीवन है	...	४०
२०.	शिष्टाचार (अच्छा व्यवहार)	...	४४
२१.	ईश-स्तुति (भजन)	...	४६
२२.	राष्ट्रीय गान	...	४८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये संस्करण की भूमिका

उपनिषद् में लिखा है कि माता-पिता तथा आचार्य की कृपा से ही मानव जीवन विकसित होता है। इन तीनों व्यक्तियों के सहयोग से ही बालक अथवा बालिका योग्य व्यक्ति बन सकते हैं। विद्यालय ही एक ऐसा स्थान है जिसमें भावी जीवन की रचना होती है। स्वस्थ वातावरण में विद्याध्ययन करने से, उनके भावी जीवन का सर्वतोमुखी विकास होगा। वेद में तीन समिधाओं को सम अनुपात से प्रज्ज्वलित करने की आज्ञा है। इसका तात्पर्य है—हृदय, मस्तिष्क तथा शरीर का समुचित विकास, हृदय में धर्मग्रंथों तथा माता-पिता के प्रति श्रद्धा, आर्य संस्कृति के गौरव का गर्व, राष्ट्र तथा उसके उन्नायकों के प्रति स्नेह। मस्तिष्क की समिधा तभी प्रदीप्त होगी जब बालक के मस्तिष्क की पिटारी को ज्ञान, विज्ञान एवं तर्क शक्ति से परिपूर्ण कर दिया जायेगा, ताकि वह नव ज्ञान को प्राप्त करे और संसार के पाखण्डियों के चंगुल में न फंस सके।

डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति ने इसी उद्देश्य को सामने रखकर कालेजों और स्कूलों का जाल बिछा दिया है जिनमें लाखों छात्र-छात्राएँ शिक्षा प्राप्त कर अपने भावी जीवन को पवित्र तथा राष्ट्रोपयोगी बना रहे हैं। समय-समय पर धर्म-शिक्षा के प्रकाशन से छात्रों में चरित्र निर्माण, संस्कृति प्रेम, राष्ट्र स्नेह तथा विचार शक्ति की प्रेरणा दी जा रही है। इस अभिनव संस्करण की रचना प्रबन्धकर्त्री समिति के निर्देशों के आधार पर श्री अर्जुनदेव शास्त्री ने पं० रामगोपाल शास्त्री व श्री सी० एल० आनन्दजी की सहायता से की है। इसमें सभी प्रकार से उचित सामग्री का समावेश किया गया है।

आशा है इन पुस्तकों का पाठ्यक्रम बच्चों तथा नवयुवकों के चरित्र निर्माण में पूर्णतया सहायक होगा। निवेदक—

मंत्री, डी०ए०वी० कॉलेज
प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के नियम

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जानें जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२ ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्याय-कारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनें योग्य है।

३. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।

६. संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य बर्तना चाहिए।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंन्त्र रहें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १

ईश—विनय

प्रभो ! हम मांग रहे वरदान ।
हाथ जोड़ करते हैं, हम सदा तुम्हारा ध्यान ।
जब-जब मुख से वचन निकलते ।
आपस में हिल-मिल कर चलते ।
कीर्ति तुम्हारी गा-गा कर हम, मिटा दें अभिमान ।
प्रभो·····

सूर्य चन्द्रमा सदा घूमते, तारे नभ को सदा चूमते ।
यह नील आकाश तुम्हारा ही तो खड़ा वितान ।
प्रभो·····

सुन्दर सुरभित फूल मनोहर, तुमने पैदा किए यहां पर ।
इनको देश तुम्हारे मुख का हो आता है ध्यान ।
प्रभो·····

निज चरणों में विमल भक्ति दो ।
जन-सेवा की नाथ शक्ति दो ।
जन-सेवा की नाथ शक्ति दो ।
तुम अंजान मत बनो, बना दो हमें सुजान समान ।
प्रभो·····

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २

गायत्री मन्त्र

ओ३म् । भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् । यजु० ३६/म० ३

वच्चो ! यह गायत्री मन्त्र है इस मन्त्र को गुरु मन्त्र भी कहते हैं । जब किसी बालक का यज्ञोपवीत (जनेऊ) होता है, तो गुरु उसे गायत्री मन्त्र का उपदेश देता है । श्री रामचन्द्र तथा महाराज श्रीकृष्ण को भी उनके गुरुओं ने यही मन्त्र दिया था । प्राचीन समय में जब बालक पाठशाला में पढ़ने के लिए जाता था, तो गुरु सबसे पहले उसे इसी मन्त्र को कण्ठस्थ कराते थे ।

ऋषि, मुनि तथा महात्मा लोग इस गुरु मन्त्र को परम पवित्र समझते थे । वे इस मन्त्र का प्रतिदिन जप करते थे । इसीलिए उनकी बुद्धि पवित्र थी और वे बहुत बड़े विद्वान् तथा सन्त बन गए ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गायत्री मन्त्र का अर्थ

हे भगवान् ! आप संसार के बनाने वाले तथा सबको जीवन देने वाले हैं। आप हमारे दुखों को दूर करने वाले और सब प्रकार के सुख देने वाले हैं। हम आपके इस प्रकाशमय और प्रेरक स्वरूप का ध्यान करते हैं, जो हमारे बुरे कार्यों को हमसे दूर करता है। हे ईश्वर ! आप हमारी बुद्धियों को अच्छे मार्ग पर ले जाएं।

बालको ! इस मन्त्र को कण्ठस्थ कर लो। इसके अर्थ भी समझ लो। प्रातःकाल इस मन्त्र का जप किया करो। तुम्हारी बुद्धि पवित्र होगी और दिनों-दिन बढ़ेगी।

जप करते समय इसके अर्थ को भी बार-बार दोहराते जाओ।

—:o:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ३

महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द एक उच्च कोटि के साधु महात्मा थे। उन्हें महर्षि इसलिए कहा जाता था कि उन्होंने वेदों और शास्त्रों को पढ़कर सच्चा ज्ञान प्राप्त किया था। उनका आचरण भी वेदों और शास्त्रों की शिक्षा के अनुकूल था। उन्होंने सारा जीवन लोगों की भलाई में लगा दिया। उनमें लोभ-लालच नहीं था। उनका किसी वस्तु से मोह नहीं था। उनमें आलस्य तो लेशमात्र भी नहीं था।

महर्षि ने अपना सारा जीवन संसार की भलाई में लगा दिया। वेदों का सच्चा ज्ञान लोगों को दिया। उन्होंने आर्य जाति का बहुत उपकार किया। उनका जन्म सन् १८२४ ई० में गुजरात राज्य के मोरवी प्रदेश में टंकारा नामक गाँव में हुआ। उनका पहला नाम मूलशंकर था। वही बालक आगे 'महर्षि दयानन्द' कहलाया। उन्होंने ही आर्य समाज की स्थापना की।

—: o :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ४

मूलशंकर और शिव-पूजन

बालको ! इस चित्र को ध्यान से देखो। इसमें कुछ लोग ऊंघ रहे हैं। बीच में शिव की मूर्ति है, जिस पर कुछ चूहे चढ़

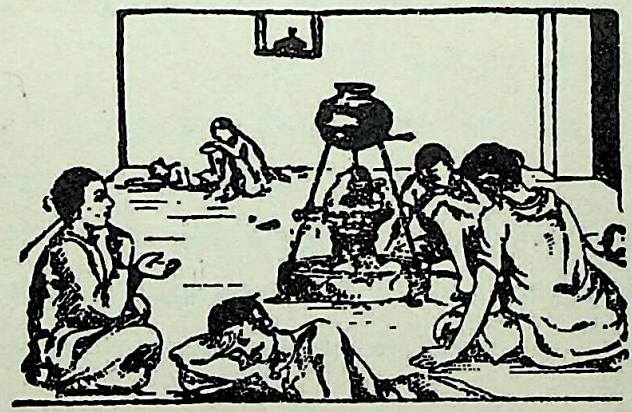

कर भेंट की गई वस्तुओं को खा रहे हैं। केवल चौदह वर्ष का बालक जाग रहा है, जो यह सब कुछ बड़े ध्यान से देख रहा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बालक मूलशंकर आगे चलकर दयानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इनके पिता का नाम कर्षन जी था।

आओ, आपको शिव पूजन की घटना की कथा सुनाएं।

मूलशंकर के पिता कुछ कठोर स्वभाव के थे और अपनी धुन के पक्के थे। शिव-भक्त थे मूर्ति पूजा किया करते थे और व्रत रखा करते थे। चाहते थे कि उनका पुत्र भी ऐसा ही किया करे, जिससे वह भी शिव-भक्त बन जाए। मूलशंकर की माता, इकलौता पुत्र होने के करण उससे, बहुत प्यार करती थी। वह यह कह कर टाल देती थीं, 'अभी कौन-सा बड़ा हो गया है? बड़ा होने पर शिव-भक्त बना लेना।'

शिवरात्रि का उत्सव आ गया। बालक मूलशंकर ने बड़ी श्रद्धा से व्रत रखा। दिन भर 'शिवपुराण' की कथा सुनी। रात्रि को अपने पिता के साथ गांव के समीप मन्दिर में शिव-पूजन के लिए गया। उसने शिवपुराण में सुना था—शिवरात्रि का व्रत रखने और रात भर जाग कर शिव-मूर्ति का पूजन करने से बहुत पुण्य होता है।

भक्त लोग रात्रि को पूजा करते-करते धीरे-धीरे ऊंघने लगे। पंडित जी एक ओर जा लेटे। केवल बालक मूलशंकर जागता रहा। उसे भय था कि कहीं सो जाने से व्रत का पुण्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी न मिले। जागते हुए उसने देखा एक चूहा उछल-उछल कर शिव की मूर्ति पर चढ़ रहा है और भेंट की गई वस्तुएं खा रहा है। मूलशंकर ने सोचा, क्या यही संसार का बनाने वाला परमेश्वर है, जो इन चूहों को भी नहीं हटा सकता।

"यह तो पत्थर है। इसमें न प्राण हैं, न शक्ति है" इस विचार ने मूलशंकर के जीवन में उथल पुथल मचा दी।

—: o :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ५

स्वामी दयानन्द-संन्यास और प्रचार

बालक मूलशंकर ने मूर्ति पूजा को सदा के लिए छोड़ दिया वह सच्चे शिव को जानने के लिए आतुर रहने लगा। अपनी बहन और चाचा जी की मृत्यु के कारण उसका मन घर से उचाट हो गया। एक दिन वह घर के सुखों को छोड़कर वहाँ से निकल पड़ा। कई स्थानों पर घूमे फिरे व वेदों और शास्त्रों को पढ़ा।

संन्यास लेना

संन्यासी बन कर दयानन्द योगाभ्यास करने लगे। पहाड़ों पर नंगे पाँव घूमते रहे। सच्ची विद्या के लिए आप गुरु की खोज करते हुए मथुरा नगरी में पहुंचे। वहाँ रह कर गुरु विरजानन्द सरस्वती से उन्होंने उत्तम विद्या पढ़ी। गुरु जी की आज्ञा से वेदों का प्रचार करने लगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचार—

स्वामी जी वेदों का सच्चा उपदेश दिया करते थे। पाखण्ड की बातों को अच्छा न समझकर उसका खण्डन किया करते थे। बुद्धिमान् लोग तो उनके विचारों को सुनकर फूले न समाते थे। स्वार्थी ब्राह्मण लोग और मूर्ति के पुजारी तथा मुसलमान और ईसाई उनके शत्रु बन गए। उन्होंने काशी जाकर बड़े-बड़े पंडितों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा पंडित लोग वेदों में मूर्ति पूजा सिद्ध न कर सके।

पंडितों ने अपनी हार देखकर बड़ा ऊधम मचाया। स्वामी जी को बहुत बुरा भला कहा। पर सच्चाई का डंका बज उठा अनेक, ब्राह्मणों तथा विद्वानों पर उनके विचारों का बड़ा प्रभाव हुआ और वे उनके भक्त बन गये।

—: o :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ६

क्षमाशील दयानन्द

एक बार स्वामी दयानन्द जी अपनी कुटिया में निवास कर रहे थे । प्रातःकाल और सांयकाल बहुत से लोग उनके उपदेशों को सुनने के लिए आया करते थे। एक दिन की बात है कि एक मनुष्य ने उन्हें विष मिला पान दे दिया। स्वामी जी उसे चबा गये। वे तुरन्त कुएँ पर गए और पेट भर पानी पी लिया। उन्होंने अपने योग बल से सारे विष को उल्टी करके निकाल दिया।

यह बात चारों ओर फैल गई । वहाँ के तहसीलदार को भी पता लगा । खोज करने पर अपराधी पकड़ा गया। उसे तहसीलदार हथकड़ी डाल कर स्वामी जी के पास ले गया स्वामी जी ने तहसीलदार से कहा—"इसे छोड़ दीजिए, मैं लोगों को कैद कराने के लिए संसार में नहीं आया । मैं तो उन्हें छुड़वाने आया हूं।

इससे पता चलता है कि स्वामी दयानन्द जी महाराज कितने बड़े दयालु थे।

—: o :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ७

निडर संन्यासी

स्वामी दयानन्द जी महाराज सच्चाई कहने में किसी से डरते नहीं थे । उन्हें न अपमान का डर था, न जान का। वे कहा करते थे कि यदि कोई मेरी अंगुलियों की बत्ती बनाकर जला दे तो भी में सच कहने में संकोच नहीं करूंगा और सदा सच कहूंगा।

एक बार जोधपुर के महाराज ने स्वामी जी को अपने राज्य में आने के लिए निमंत्रण दिया। साथ ही यह भी कहला भेजा कि यदि मूर्ति पूजा ठीक नहीं, तो वेदों का उपदेश लोगों को क्यों न सुनाऊं।

एक बार एक मुसलमान डाक्टर ने स्वामी जी से प्रार्थना की—"महात्मा जी ! कुछ दिन आप मेरी कोठी पर उपदेश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया करें।" स्वामी जी ने निर्भयता से ईसाई तथा इस्लाम मत का खण्डन किया। लोग उनकी निर्भयता को देखकर हैरान हो गये।

बालको ! सच्चा मनुष्य निर्भय होता है। वह किसी की धमकी से नहीं डरता। स्वामी जी ऐसे ही निडर संन्यासी थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ८

दयानन्द और निर्धन माता

स्वामी दयानन्द जी ने अभी आर्य समाज की स्थापना नहीं की थी। उस समय एक ऐसी घटना हुई जिसे देख कर उन्हें बड़ा दुःख हुआ। यह घटना इस प्रकार है :

स्वामी दयानन्द जी हिमालय की गोद में घूमा करते थे। वहीं कुटिया बनाकर योगाभ्यास भी किया करते थे। इस प्रकार कठोर तपस्या करते हुए कई वर्ष बीत गए। पहाड़ों को छोड़कर गंगा तट पर रहने लगे और वहीं योगाभ्यास करने लगे। एक दिन उन्होंने सदा की भाँति समाधि लगाई। कुछ घण्टों के पश्चात् स्वामी जी की समाधि खुली। उन्होंने एक स्त्री को देखा। वह अपने मृत पुत्र को गंगा में बहाने के लिए लाई थी। उसने उसके शरीर से वस्त्र उतार लिया और उसे जल में बहा दिया।

इस घटना को देखकर दयालु दयानन्द का हृदय वेदना से भर गया और वे उस स्त्री के पास जाकर बोले—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देवी ! तुमने अपने पुत्र के शरीर को बिना कफन के गंगा में बहा दिया और उस कफन को तुम अपने साथ ले जा रही हो।" यह सुनकर उस देवी ने सिसकते हुए कहा—"महाराज ! मैं इतनी निर्धन हूँ कि इस धोती के सिवाय मेरे पास ओढ़ने के लिए कपड़ा नहीं, जिससे में अपने मृत पुत्र के शरीर को ढांप सकती। मैं अपनी ओढ़ी हुई धोती को फाड़ कर उसके टुकड़े से लाश को ढांपकर लाई हूं। अब मैंने टुकड़ा भी धो लिया है। मैं इसे घर जाकर धोती के साथ सी लूंगी और इस प्रकार अपने शरीर को ढांप सकूंगी।"

इस उत्तर को सुनकर स्वामी जी की आँखों से आंसू बह निकले उन्होंने कहा—"ओ मेरे प्यारे देश ! तू कभी वीरों तथा चक्रवर्ती राजाओं की भूमि था। सारे संसार में आर्यों का राज्य था। सभी लोग सुखी थे। आज तेरी सन्तान को शरीर ढांपने के लिए वस्त्र भी नहीं। मैं तुझे सुखी बनाने के लिए अपना जीवन दे दूंगा।"

इस प्रकार की घटनाओं को देख कर ऋषि ने आर्यों को उपदेश दिया—"आर्यो ! भारत को धन धान्य से सम्पन्न बनाओ और देश को दासता के बन्धन से छुड़ाओ।"

—: ० :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ९

ऋषि निर्वाण

ऋषि दयानन्द ने वेदों का प्रचार किया। उन्होंने वे बातें बताईं; जिन से संसार का भला हो। उन्होंने देशवासियों को स्वतन्त्र होने के लिए भी जगाया। वे विदेशी राज्य को अच्छा नहीं समझते थे। उनके उपकारों को संसार नहीं भूल सकता, वे ऋषि थे, महापुरुष थे, उनका परमात्मा पर बहुत विश्वास था।

उन्हें एक दुष्ट ने पिसा हुआ काँच दूध में पिला दिया। उनकी अजमेर नगर में मृत्यु हो गई। वे मरते समय भी प्रसन्न थे और गायत्री मन्त्र जपते रहे। अन्तिम सांस में उनके मुंह से शब्द निकले।

"हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो।" उनकी मृत्यु एक महात्मा तथा ऋषि की मृत्यु थी, जिन्होंने उन्हें मरते हुए देखा, वे ईश्वर तथा देश के सच्चे पुजारी बन गए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी स्मृति में आर्यों ने एक स्कूल १ जून १८८६ में लाहौर में खोला। इसका नाम दयानन्द एंग्लो-वैदिक (डी० ए० वी०) स्कूल रखा गया। आज अनेक स्कूल और कालेज उनके नाम पर खुल चुके हैं और खोले जा रहे हैं। धन्य हैं स्वामी दयानन्द !

—: ० :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १०

अच्छा मित्र

संदीपन महात्मा के विद्यालय में अनेक विद्यार्थी पढ़ा करते थे। उन्हीं में सुदामा और श्रीकृष्ण भी थे। श्रीकृष्ण राज-परिवार के बालक थे। और सुदामा किसी निर्धन ब्राह्मण के पुत्र थे। पर इन दोनों में परस्पर घनिष्ठ प्रेम था। प्राचीन काल में धनी और निर्धन परिवार के बालक मिलकर एक ही गुरुकुल में पढ़ा करते थे। धनी और निर्धन में कोई भेद नहीं समझा जाता था। उन्हें एक जैसा भोजन और एक जैसे वस्त्र मिलते थे।

कुछ दिनों में सुदामा और श्रीकृष्ण की मित्रता सुदृढ़ हो गई। दोनों मिल कर जंगल में घूमते थे और आश्रम के लिये फल फूल तथा ईंधन लाया करते थे।

विद्या समाप्त कर दोनों अपने-अपने घरों को चले गये। श्रीकृष्ण जी तो धीरे-धीरे महान् व्यक्ति बन गये। उन्होंने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पापी कंस का भरी सभा में वध कर अपने माता-पिता को कैद से छुड़ाया। अपने नाना को राजसिंहासन पर बैठाया। कौरवों के भाई पांडवों से उनके वंश का पहले ही सम्बन्ध था। उनकी फूफी पांडवों की माता थी। श्रीकृष्ण जी का देश-विदेश में डंका बज उठा। वे अपूर्व योद्धा और महान् विद्वान् थे। उन्होंने चुन-चुन कर अनेक पापियों को मरवा दिया और स्वयं मथुरा से द्वारिका जा बसे।

श्रीकृष्ण जी का मित्र सुदामा पाठ-पूजा में ही लगा रहा। वह सच्चे ब्राह्मण की भाँति जीवन बिता रहा था। समय आया जब उसके लिये अपने परिवार का पेट पालना भी कठिन हो गया। उसकी पत्नी ने उसे द्वारिका में श्रीकृष्ण से मिलने तथा अपने कुटुम्ब के पोषार्थ धन मांगने के लिये भेजा।

सुदामा चावलों की तुच्छ भेंट लेकर द्वारिका की ओर चल पड़ा। बहुत कष्टों को उठाकर वह द्वारिका नगरी पहुंचा। सुदामा के वस्त्र फटे हुए थे। नंगे पैर चलने से पाँव काँटों से छलनी-छलनी हो गये थे। शरीर शिथिल हो गया था। महाराज श्रीकृष्ण के महल के आगे खड़ा होकर सुदामा सोच रहा था कि भीतर किस प्रकार पहुंचा जाये।

एक द्वारपाल ने जा कर पूछा—ओ ब्राह्मण! क्या देख रहा है?

सुदामा—मैं महाराज श्रीकृष्ण का बाल मित्र हूं। मैं उनसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलने आया हूं।

द्वारपाल से सुदामा के आने की सूचना पाकर श्री कृष्ण व्याकुल हो उठे और भागते हुए ड्योढ़ी पर आ गये। पुराने मित्र को देखकर सुदामा को गले से लगा लिया। उसका हाथ पकड़ कर महल में ले गये। दिल खोल कर उसके साथ विद्यार्थी-काल की बातें कीं। कुछ उपहास भी किया। स्वर्ण पात्र में जल भर कर मित्र के चरण धोये। सुन्दर वस्त्र पहनाये अनेक प्रकार के भोजन से तृप्त किया। सुदामा कई दिन वहाँ रहे, किन्तु संकोचवश माँगा कुछ नहीं।

महाराज अपने मित्र की अवस्था को देखकर ही समझ गये थे कि उनका मित्र धन तथा भवन आदि न होने के कारण दुःखी है। कुछ दिनों में उसके लिए सुन्दर भवन बनवा दिया और उसे धन-धान्य से माला माल कर दिया।

महाराज श्री कृष्ण एक सच्चे मित्र थे। सच्चा मित्र वही कहलाता है, जो अपने मित्र की मित्रता को नहीं भूलता और कठिनाई के समय उसकी सहायता करता है।

—: o :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ११

अपनों से वैर

पाठशाला में एक लड़की ने अध्यापिका से पूछा—बहिन जो कुत्ते को लोग बुरा क्यों मानते हैं। उसे छूना भी अच्छा नहीं समझते। वह तो अपने मालिक के लिए प्राण देने को तैयार हो जाता है। घर की रखवाली अच्छी तरह करता है किसी चोर को घर के पास भी आने नहीं देता। जैस अच्छी बुरी रोटी मालिक उसे देता हैं, उसे खाकर सन्तुष्ट रहता है।

दूसरी लड़की—हाँ-हाँ, वह अच्छा पहरेदार हैं, वह सोता हुआ भी जरा सी आहट से चौंक उठता है।

अध्यापिका—मैं जानती हूँ कि उसमें सभी गुण हैं—वह अपने मालिक का भक्त है, वह घर का रखवाला है, परन्तु उस में एक बड़ा भारी दोष है। वह है अपनों से वैर करना। वह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी दूसरे कुत्ते को देख लेता है, तो झट उसके पीछे पड़ जाता है, उसे काट खाता है। पर दूसरों से प्यार करता है।

लड़कियाँ—बहिन जी ! आपने ठीक ही कहा।

अध्यापिका—जो बालक अपने भाई-बहनों से लड़ते-झगड़ते हैं, वे भी बुरे कहलाते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १२

मीठी वाणी

वेद का उपदेश है, हे मनुष्यो ! तुम सदा ऐसा बर्ताव करो जो मधुरता से भरा हुआ हो, वाणी से मीठा बोलो। मधु (शहद) के समान मीठे बन जाओ । जिस बालक का स्वभाव मीठा होता है, उसे सब प्यार करते हैं। सब चाहते हैं कि वह बालक उनके पास आकर अपनी मीठी बाणी से उनको प्रसन्न करे । जैसे सबकी इच्छा होती है कि वे गुड़, खांड, शहद जैसे मीठे पदार्थ खायें, वैसे ही उनकी यह इच्छा भी होती है कि उनके भाई-बहिन, बन्धु और मित्र मीठा बोलने वाले बन कर उनसे मेल जोल करते हुए उन्हें सदा आनन्द दें।

जो बालक कड़ुवे वचन बोलने वाला हो, वह किसी को भी अच्छा नहीं लगता। सब उससे दूर रहना चाहते हैं। और उसके साथ कोई भी मित्रता करना नहीं चाहता । किसी ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच कहा है कि समय पाकर तलवार का घाव मिट जाता है, परन्तु वाणी द्वारा निकला हुआ कड़ुवा वचन जब घाव करता है, तो वह मिट नहीं सकता इसलिए किसी के लिए बुरे और कड़ुवे वचन मत बोलो । सबको 'जी' कहकर पुकारो । यदि तुम दूसरों के साथ मीठा बोलोगे तो दूसरे भी तुम्हारे साथ मधुरता का व्यवहार करेंगे ।

—: o :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १३

राजा और मंत्री

एक राजा सदा ही कड़ुवी वाणी बोलता था। सब मन्त्री उससे दुःखी थे और मन ही मन में उससे घृणा करते थे। अब उसको समझाए, तो कौन समझाए, क्योंकि सबके सब उससे डरते थे।

उनको अपनी मान हानि का भी भय रहता था। एक दिन राजा ने दरबार में पूछा कि सबसे बुरी वस्तु क्या है, उसे मेरे पास लाओ। कोई कुछ ले आया और कोई कुछ।

राजा का एक मन्त्री बहुत बुद्धिमान था। उसने सोचा कि अब राजा को समझाने का समय आ गया है। उसने एक मुर्दे की कटी हुई जीभ अपने पास रख ली। जब सब सेवक अपनी वस्तुएँ राजा के सामने रख चुके तो मन्त्री ने भी मुरदे की कटी हुई वह जीभ उसके सामने रख दी। राजा उसको देखकर बोला—मन्त्री जी ! मैं तो आपको बुद्धिमान् समझता था

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपने यह क्या रख दिया। मन्त्री ने कहा—महाराज, इससे बुरी वस्तु संसार में कोई नहीं। यह बात ही बात में वंशों को नष्ट कर देती हैं। इसके कारण अपने भाई और बन्धु भी शत्रु बन जाते हैं। इसका बुरा प्रयोग करने से जातियों और राजाओं का नाश हो गया। महाराज! इससे बढ़कर बुरी वस्तु और क्या हो सकती है? यह बात राजा के मन में घर कर गई।

कुछ दिन पीछे राजा ने दरबार में फिर यह आज्ञा दी कि सब लोग अच्छी से अच्छी वस्तु उसके पास लायें। मन्त्री ने फिर वही कटी हुई जीभ पेश कर दी और कहा कि महाराज! इससे अच्छी वस्तु संसार में कोई नहीं।

यह देखकर राजा को अचम्भा हुआ और वह कहने लगा कि मन्त्री जी! आप तो इसे बुरा कहते थे। अब यह अच्छी कैसे बन गई।

मन्त्री ने उत्तर दिया—महाराज! यह ठीक है कि जीभ बहुत बुरी चीज है, पर उस हालत में जब यह बुरी बात कहे, कड़ुवी बात बोले। यदि मीठी हो और मीठे वचन बोले तो यही जीभ सबसे प्यारी बन जाती है। इससे पराये भी अपने हो जाते हैं। जो काम लाखों रुपयों के खर्च करने से नहीं हो सकता वह केवल मीठे वचन बोलने से हो सकता है।

यह सुनकर राजा की आँखें खुल गई। उसने मन्त्री का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्यवाद किया और कहा कि आपने मुझे बहुत अच्छा उपदेश दिया है। मैं भविष्य में कड़ुवे वचन बोलना छोड़ दूंगा।

बालको आप सदा मीठे वचन बोलो। मीठा बोलने वाला बच्चा अच्छा लगता है। तुमने सुना होगा—

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आप भी शीतल होय॥

—: ● :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १४

माता का ऋण

एक बार महाराजा रणजीतसिंह के एक दरबारी ने अपनी माता से एक लाख रुपया दान कराया। उसकी माता को बड़ी खुशी हुई। मित्रों और दूसरे लोगों ने भी उस दरबारी की बड़ी प्रशंसा की। वह भी समझने लगा कि मैंने अपनी माता का ऋण उत्तार दिया। माता बड़ी समझदार थी। वह ताड़ गई कि उसके पुत्र में अभिमान हो गया है।

एक रात जब उसका पुत्र अपने बिस्तर पर सोया पड़ा था, तो उस पर उसने थोड़ा सा पानी छिड़क दिया। दरबारी जाग उठा और कहने लगा—माता जी यह क्या कर दिया? वह फिर सो गया। माता ने कुछ देर बाद फिर थोड़ा-सा पानी गिरा दिया। उठकर दरबारी ने क्रोध से कहा—माता जी क्यों तंग कर रही हो? थोड़ी देर बाद वह फिर सो गया।

उसके फिर सो जाने पर माता ने फिर वही किया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरबारी उठकर माता से लड़ने को तैयार हो गया और बोला—माता जी ! तुम पागल हो गई हो क्या ?

यह सुनकर माता बोली—बेटा, तुम तो एक रात में ही मुझे पागल कहने लगे। जब तुम छोटे थे तो तुम्हें मैं अपने पास सुलाती थी। तुम मेरे बिस्तर को हर रात पेशाब से गीला कर देते थे। मैं तुम्हें सूखी जगह लिटा देती थी। और आप गीले कपड़े पर ही लेटी रहती थी। यदि मैं ऐसा नहीं करती तों तुम इतने बड़े किस तरह हो जाते ?

दरबारी समझ गया कि उसकी माता ने उसका अभिमान तोड़ने के लिए यह शिक्षा दी है। उसने हाथ जोड़कर अपनी मां का धन्यवाद किया और कहा—माता जी, तुम्हारा उपदेश सच्चा है। कोई पुत्र कितनी ही सेवा क्यों न करे, अपनी माता का ऋण नहीं उतार सकता।

बच्चो ! जिस माता ने कष्ट सहकर, तुम्हें पाल-पोसकर इतना बड़ा किया है, वह सचमुच परमात्मा का रूप है ! तुम जीवन भर सेवा करके भी उसका ऋण नहीं उतार सकते। माता का आदर करो। उसे सुखी बनाओ। तुम ऐसा कोई काम न करो जिससे उसे कष्ट हो।

—: o :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १५

अस्तेय (चोरी न करना)

आओ बच्चो ! हम तुम्हें एक अच्छे लड़के की कहानी सुनाएं। स्कूल में एक लड़का पढ़ता था। उसका नाम था, सत्यप्रिय उसकी आयु लगभग चौदह वर्ष थी और वह आठवीं श्रेणी का विद्यार्थी था। आर्य समाज में उपदेशों को वह बड़े ध्यान से सुना करता था। एक दिन उसने अध्यापक से पूछा।

गुरु जी ! 'अस्तेय' का क्या अर्थ है ? गुरुजी ने समझाकर कहा—'प्यारे सत्यप्रिय'। 'अस्तेय' का अर्थ है चोरी न करना। यदि तुम्हें कोई वस्तु कहीं रास्ते में मिल जाए तो वह तुम्हारी नहीं, इसलिए उसे अपने पास रख लेना चोरी है। उसे उठाकर उसके मालिक को दे दो। यदि उसके मालिक का पता न चले तो स्कूल में जाकर मुख्याध्यापक को दे दो। रास्ते में किसी का बटुआ मिल जाए, कोई और वस्तु मिल जाए, किसी विद्यार्थी की पुस्तकें पैन आदि मिल जाएँ तो मालिक का पता लगाकर उसे दे दो।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी दिन से उस बालक ने मन में प्रतिज्ञा कर ली कि मैं सदा 'अस्तेय' का पालन करूँगा। जो वस्तु मुझे मिलेगी, उसे अपनी न समझूंगा। उसे कई बार स्कूल में कई वस्तुएँ मिलीं. पर उसने अपने मुख्याध्यापक को दे दीं।

एक दिन वह बालक स्कूल से घर जा रहा था। उसे रास्ते में गिरा हुआ एक बटुआ दिखाई दिया। बालक नें उसे उठा लिया। खोला तो उसमें सौ-सौ के पांच नोट थे। यदि कोई बुरा लड़का होता, तो वह उस बटुए को अपने पास रख लेता और उन रुपयों से मौज उड़ाता। परन्तु वह स्कूल लौट गया। उसने वहाँ जाकर मुख्याध्यापक की मेज पर बटुआ रख दिया। इसे देखकर तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। दूसरे दिन जब स्कूल खुला तो सब लड़कों के सामने मुख्याध्यापक ने उस बालक की पीठ थपथपाई। उसे इनाम भी दिया गया। दिल से मालिक की खोज शुरू कर दी गई। मालिक के मिलने पर उसका बटुआ उसे दे दिया गया। बालको! इसी प्रकार यदि तुम्हें कोई वस्तु मिल जाए तो उसे अपनी न समझो!

—: o :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १६

बाल-प्रतिज्ञा

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे,
दयानन्द का काम पूरा करेंगे।

उठाये ध्वज धर्म का हम फिरेंगे,
उसी के लिए हम मरेंगे-जियेंगे।

गुंजाएंगे वेदों के हम गीत गाकर,
दिखायेंगे जीवन को सच्चा बनाकर।

वही प्रेम गंगा यहाँ फिर बहेगी,
जो संसार की ताप माला हरेगी।

कहेगा जगत् फिर से इक स्वर में सारा,
वही वृद्ध भारत गुरु है हमारा।

—: ० :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १७

जैसी करनी वैसी भरनी

किसी कुम्हार के पास एक गधा था। कुम्हार उससे सारा दिन काम लेता था। सवेरा हो या शाम, दोपहर की कड़कती धूप हो या सर्दी बेचारे गधे को आराम नहीं मिलता था। खाने के लिए उसे सूखी घास या गन्दगी के ढ़ेर की गली सड़ी वस्तुएँ मिलती थीं।

वह एक दिन भागकर जंगल में चला गया। अचानक उसे मरे हुए शेर की खाल मिल गई। उसने सोचा—"क्यों न इस खाल को ओढ़कर शेर बन जाऊँ। जंगल के सभी जानवर मुझसे डरा करेंगे।"

उसने खाल उठाई और ओढ़ ली। सब जंगली जानवर उसे शेर समझकर उससे डरने लगे। एक बार चीते, रीछ और हाथियों को भी उसने धमकाकर कहा—'मैं इस जंगल का राजा हूं। आज से सारा काम मेरी आज्ञा से किया करो।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिन से वे भी उसे शेर समझकर उससे डरने लगे।

बहुत दिन बीत गये। अब गधे महाराज के बुरे दिन आ गये। एक दिन किसी गधे के रेंकने की आवाज सुनाई दी। उसे सुनते ही यह झूठा शेर भी ढ़ेंचू-ढ़ेंचू करके रेंकने लगा। इस प्रकार उसके रेंकने की आवाज जंगल के बड़े जानवरों ने सुनी। बाघ, चीते, रीछ तथा हाथी उस आवाज को सुनकर जान गये कि यह भी गधा है। इसने हमें झूठ-मूठ धमका कर धोखा दिया। पशु गधे पर टूट पड़े और उसे मार डाला। गधे को धोखा देने का फल मिल गया।

बालको! यदि तुम अपना भला चाहते हो तो किसी को धोखा न दो। धोखा देने वाले के धोखे का पता जब लग जाता है, तो उसको वही फल मिलता है जो इस गधे को मिला।

—o—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १८

जज की फीस

दो बिल्लियां थीं। उनका आपस में बड़ा मेल था एक दिन उन्हें कहीं से एक रोटी मिल गई। उन्होंने उसके दो टुकड़े किये। एक टुकड़ा कुछ छोटा रह गया, दूसरा बड़ा था। इस पर दोनों में झगड़ा होने लगा। एक बोली, "बड़ा टुकड़ा मैं लूंगी।" दूसरी ने कहा, "तू क्यों लेगी ? इसे मैं ही लूंगी।"

इस तू-तू मैं-मैं के बीच वहाँ एक बन्दर आ निकला। उसने कहा "बिल्लियों ! तुम आपस में क्यों झगड़ती हो ? लाओ अपनी तराजू से इस रोटी के बराबर-बराबर दो टुकड़े कर देता हूं।"

बिल्लियों ने उसकी बात मान ली। बन्दर ने तराजू उठाई और दो टुकड़े तोलने लगा। उसने देखा कि दोनों टुकड़ों में से एक टुकड़ा भारी है। उसने उनमें से कुछ भाग तोड़ा और अपने मुंह में डाल लिया।

अब दूसरे टुकड़े वाला पलड़ा भारी हो गया। पहले की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह उसने उसमें से भी कुछ भाग खा लिया। इस तरह कभी एक टुकड़े में से और कभी दूसरे में से थोड़ा-थोड़ा मुंह में डालता रहा।

अब केवल थोड़ा-सा चूरा देखकर बिल्लियों ने कहा, "जज महाराज! अब हम अपने आप बांट लेंगी। हमें बचा-खुचा चूरा ही लौटा दो।"

बन्दर ने हंसते हुए कहा, "अब तो बंटवारा हो ही चुका। शेष बचा चूरा जज की फीस होगी।"

यह कहकर उसने चूरा भी खा लिया। दोनों बिल्लियाँ अपना-सा मुंह लेकर रह गईं।

शिक्षा—आपस के झगडे को आपस में ही निपटाना अच्छा है। नहीं तो बिल्लियों की तरह पछताना पड़ेगा।

—:●:—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १९

स्वास्थ्य ही जीवन है

एक दिन एक संन्यासी महात्मा आर्य समाज में पधारे। सत्यभूषण नाम के आर्य ने हाथ जोड़कर कहा महाराज ! यह मेरा पुत्र है, इसका नाम है मोहनदेव। यह सदा रोगी रहता है सदा निर्बल रहता है। स्कूल जाता है तो साथी उसे सताते हैं। स्कूल से घर जाता है तो थक जाता है। कहीं मेले में जाए तो इसके पिस जाने का भय रहता है। जरा धूप में चलने से इसका सिर चकराने लगता है। सर्दी में इसे निमोनिया भी हो जाता है। अधिक खाता है तो पेट में दर्द हो जाता है। कम खाता है तो चक्कर आने लगता है। कभी जुकाम होता है, कभी आँखें दुखने लगती हैं। कई-कई दिन स्कूल नहीं जा सकता। सारा परिवार इसके लिए चिन्तित है। महाराज ! आप वैद्य भी हैं। आप दया करके हमारी चिन्ता दूर कीजिए।

महात्मा—मैं समझ गया हूं, यह लड़का आलसी है। यह सवेरे उठकर खुली वायु में नहीं घूमता। देर तक सोया रहता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यही कारण है कि इसका स्वास्थ्य बिगड़ रहा है।

(महात्मा जी मोहन को समझाने लगते हैं)

महात्मा—बेटा मोहन ! परमात्मा ने तुम्हें सुन्दर शरीर दिया है। इसे सदा स्वस्थ रखना तुम्हारा कर्त्तव्य है। वही मनुष्य संसार में सुख भोग सकता है, जो स्वस्थ हो, जिसे कोई रोग न हो। रोगी मनुष्य का जीवन सुखी नहीं रह सकता।

मोहन देव—महाराज मैं निरोगी रहना चाहता हूँ। आप जो भी आज्ञा देंगे, मैं उसका पालन करूँगा।

महात्मा—बेटा वही बालक संसार में स्वस्थ रहता है जो आलसी न हो। जो बालक सवेरे नहीं उठेगा, उसे स्वस्थ वायु कैसे मिलेगी। जो बालक आलसी बनकर देर तक सोया रहेगा व्यायाम नहीं करेगा और सवेरे खेले कूदेगा नहीं, उसे खाना कैसे हजम होगा ? खाना न पचने के कारण उसका शरीर प्रति दिन निर्बल होता जाएगा। उसे कई रोग सताने लगेंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २१

शिष्टाचार (अच्छा व्यवहार)

उमा और उषा सहेलियाँ हैं। उमा को सब अच्छा कहते हैं, उषा को बुरा। उषा को यह बात खटकती है। वह सोचती है, पाठशाला वाले उसका पक्ष लेते हैं। उसने माता से यह शिकायत की। माता ने कहा, "बेटी अच्छी लड़की अपनी सहेली से ईर्ष्या नहीं करती। यदि लोग उसे अच्छा कहते हैं तो उसमें कोई अच्छाई होगी। जाओ तुम एक दिन अपनी सहेली के घर रहकर देख लो। तुम्हें पता लग जायेगा कि उसमें क्या अच्छाई है ?"

उषा ने वैसा ही किया। वह उमा के घर गई। रात को दोनों एक कमरे में ही सो गई। सवेरा हुआ दोनों उठ खड़ी हुई उमा ने उठते ही बड़ी नम्रता से माता-पिता को नमस्ते की। उन्होंने आशीर्वाद दिया। जब कभी माता-पिता ने बुलाया तो उमा ने हां जी करके सुना और बड़ों को जी करके पुकारा, जो काम करने को कहा गया उसे मन लगाकर किया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी दिन अतिथि आ गये उमा ने बड़े ही सत्कार से उन्हें नमस्ते की। बैठने को आसन दिया। जलपान के लिए पूछा। इतने में माता जी आ पहुंची। उमा बाहर आ गई। अतिथि ने माता से उमा की शिष्टता की बड़ी प्रशंसा की।

उमा नहा धोकर पाठशाला के लिए तैयार हो गई। उसने अतिथि को प्रणाम किया। उमा के साथ उषा भी पाठशाला गई। पाठशाला पहुंचते ही उमा ने हाथ जोड़कर अध्यापिका को नमस्ते की। सबके साथ नम्रता से बातचीत करती रही। किसी से लड़ाई झगड़ा नहीं किया। कभी कोई बुरा शब्द या गाली मुंह से नहीं निकाली। सहेलियां उसे प्यार करती थीं किसी ने चिढ़ाया तो नहीं चिढ़ी मुस्करा दिया। छुट्टी हुई तो अध्यापिकाओं को नमस्ते करके घर चल दी।

उषा को उमा का यह व्यवहार अच्छा लगा। वह समझ गई कि उमा का पाठशाला में मान क्यों है और उसे लोग अच्छा क्यों कहते हैं।

उषा ने प्रण किया कि वह भी उमा के समान शिष्ट और सभ्य बनेगी।

—: o :—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १

ईश-स्तुति

पितु मातु सहायक स्वामी सखा,
तुम ही इक नाथ हमारे हो ।
जिनके कछु और आधार नहीं,
तिनके तुम ही रखवारे हो ।
सब भांति सदा सुखदायक हो,
दुःख दुर्गुण नाशन हारे हो ।
प्रतिपाल करो सगरे जग को,
अतिशय करुणा उर धारे हो ।
भूलि हैं हम ही तुमको तुम तो,
हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो ।
उपकारन को कछु अन्त नहीं,
छिन ही छिन जो विस्तारे हो ।
महाराज महा महिमा तुम्हारी,
समुझे बिरले बुधवारे हो ।
शुभ शान्ति-निकेतन प्रेमनिधे,
मन मन्दिर के उजियारे हो ।
इस जीवन के तुम जीवन हो,
इन प्राणन के तुम प्यारे हो ।
तुम सो प्रभु पाय 'प्रताप हरि,
केहि के अब और सहारे हों ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय गान

जन गण मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।

पंजाब, सिंधु, गुजरात मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग,
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना गंगा,
उच्छल जलधि तरंग,

तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जय गाथा।

जनगणमंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।

जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

—०—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रक : – डी०ए०वी० इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रिंटिंग एण्ड पब्लिकेशन्ज,
रोहणी दिल्ली–११० ०८५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.